कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय .... हिन्दी

परीक्षा का दिन..........

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जावेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 158/2016

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में 'समाप्त' लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहियें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1(अ)	"विचार लो कि मर्त्य हो" इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु निश्चित है। अतः मनुष्य को मृत्यु के भय से कभी नहीं डरना चाहिए। मनुष्य को मृत्यु के भय से अपने लक्ष्य से नहीं भटकना चाहिए और लक्ष्य की ओर निरंतर प्रगतिशील रहना चाहिए। यहाँ कवि ने यही भाव व्यंजित किया जाता है।
	(ब)	कवि ने स्वार्थ प्रवृत्ति को ही पशु प्रवृत्ति कहा है। यदि मनुष्य अपने ही लिए कार्य करता है अर्थात् अपने ही स्वार्थ को पूरा करने में लगा रहता है तो इस धरती पर वह पशु के समान ही है। अतः मनुष्य को स्वार्थ प्रवृत्ति त्यागकर अपने देश के लिए कुछ करना चाहिए।
	(स)	"उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती" पंक्ति के माध्यम से कवि यह कहना चाहते हैं कि संसार में सदैव उन्हीं की कीर्ति का प्रसार होता है जो मनुष्य अपनी स्वार्थ भावना त्यागकर किसी और के लिए कुछ करता है। जो अपने लिए जीवित न रहकर दूसरो के लिए जीता है और दूसरो के लिए ही मरता है अर्थात् देश की सेवा के लिए अपना सर्वस्व त्याग देता है, उसी की कीर्ति का प्रसार होता है।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

(द) "वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे" इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने स्वार्थ भावना को त्यागकर देश सेवा या अन्य लोगो के लिए समर्पित होने का भाव व्यंजित किया है। कवि कहता है कि मनुष्य की मृत्यु निश्चित है, अतः उसे मृत्यु से नहीं डरना चाहिए जो मनुष्य इस संसार में दूसरो के लिए ही मरता और जीता है, उसी की कीर्ति का प्रसार होता है।

२.(अ) राष्ट्रीय जागरण के लिए एक मनस्वी, राष्ट्र-प्रेमी, स्वावलम्बी और अनुशासित राष्ट्रीय चरित्र के विकास की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, इसके लिए राष्ट्र की आत्मा को जगाने की अत्यधिक आवश्यकता है। ठोस आधार युवा पीढी भी राष्ट्रीय जागरण में महत्वपूर्ण योगदान रखती है।

(ब) स्वतंत्रता के पश्चात आसानी की ओर भागने के कारण आज हमारी कठिनाईयो में वृद्धि हुई है।

(स) मूल शब्द = अवलम्ब
उपसर्ग = स्व
प्रत्यय = ई

(द) शीर्षक = राष्ट्रीय चरित्र का विकास

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	5.	

कार्यालय रा.उ.मा. विद्यालय, चौरू

क्रमांक- रा.उ.मा.वि.चौ./202-420/15

दिनांक - 10 जनवरी 2016

प्रेषक:

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

चौरू

सेवा में

श्रीमान शिक्षा निदेशक

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, बीकानेर

राजस्थान

विषय- व्याख्याता के रिक्त पदो को भरने की माँग हेतु

महोदय

उपरोक्त विषयांतर्गत निवेदन है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चौरू में व्याख्याता के कई पद रिक्त हैं जिनमें अंग्रेजी, गणित और हिन्दी के व्याख्याता शामिल है। उच्च माध्यमिक स्तर की परीक्षाएं बहुत ही नजदीक हैं और व्याख्याताओं की कमी के कारण पाठ्यक्रम भी पूरा नहीं हुआ है। इस कारण बच्चो का भविष्य खतरे में है।

अतः महोदय जी से निवेदन है कि शीघ्र ही रिक्त पदो को भरने हेतु भर्ती करे ताकि उच्च माध्यमिक स्तर का शिक्षण सुचारु रूप से जारी रह सके।

भवदीय

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि.चौ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रतिलिपि सूचनार्थ

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर
2. श्रीमान शिक्षा निदेशक, बीकानेर
3. कार्यालय प्रतिलिपि

हस्ताक्षर

प्रधानाचार्य, रा॰उ॰ मा॰ वि॰ चौरु

6. "निःशुल्क कन्या शिक्षा"

प्राचीन समय से ही स्त्रियो को शिक्षा की दृष्टि से हीन दृष्टि देखा जाता है, लोग मानते है कि स्त्रियाँ पढ-लिखकर क्या करेगी, उन्हें शादी के बाद घर-परिवार के उत्तरदायित्वो को ही संभालना है परंतु वर्तमान में स्त्रियो के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है। पहले की तुलना में स्त्रियो को अधिक सम्मान प्राप्त हुआ है। इन सभी में सरकार का महत्वपूर्ण योगदान है।

सरकार ने स्त्रियो की शिक्षा को बढावा देने के लिए "निशुल्क कन्या शिक्षा" योजना चलाई जिसके द्वारा स्त्रियो को शिक्षा के अवसर प्राप्त हुए। विद्यालय तक छात्राओ को पहुँचने ~~में~~ होने वाली तकलीफो से सुरक्षा के लिए निःशुल्क साइकिल का वितरण भी सरकार द्वारा किया गया, इसके अलावा, स्त्रियो की शिक्षा को बढावा देने के लिए सरकारी नौकरियो में 33% आरक्षण भी दिया गया जिससे लोगो मे स्त्रियो की शिक्षा हेतु प्रेरणा जागी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	7.	

"शहर में बढ़ता प्रदूषण"

वर्तमान में शहरो का विकास हो रहा है। इस विकास से नए उद्योग, कारें, सिटी बस और अन्य ऐसी ही सुविधाएँ प्राप्त हुई है पर इस विकास के साथ-साथ ही शहरो को कई समस्याओ का सामना करना पड रहा है जिनमें से प्रदूषण भी एक ऐसी ही समस्या है जो निरंतर बढती जा रही है।

बढता हुआ यह प्रदूषण मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करता है परंतु इसके लिए मानव ही उत्तरदायी है, औद्योगिक ईकाईयो की चिमनियो से निकलने वाला धुआँ तथा कारो व अन्य यातायात साधनो से निकलने वाला धुआँ वायु में मिलकर वायु प्रदूषण करता है। इसके अलावा, पॉलिथिन बैग्स, को जमीन पर डालने से भूमि का उपजाऊपन कम होता है जिससे भूमि प्रदूषण हो रहता है, शहरो में बाहरी मात्रा में यातायात से उत्पन्न होने वाले शोर-शराबे से ध्वनि प्रदूषण होता है। इसी प्रकार, अपशिष्ट कचरे को जल में बहाने से जल प्रदूषण होता है। ये सभी मनुष्य को मानसिक और शारीरिक तौर पर हानि पहुँचाते है जिससे मनुष्य कई बीमारियो का शिकार हो जाता है जैसे हैजा, मलेरिया आदि।

अतः सरकार को प्रदूषण को रोकने के लिए सख्त से सख्त कानून बनाने के साथ-साथ लोगो में अपने वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए जागरूकता लानी चाहिए। इसके अलावा, लोगो को स्वअभिप्रेरणा से अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

परीक्षार्थी उत्तर

अ) विभिन्न वर्गों के लोग इस कारण दुःखी है कि उनके पास अपने जीविका को चालने हेतु रोजगार नहीं है। इस स्थिति में किसानो के पास खेती के साधन नहीं है, भिखारी को भीख और दक्षणा नहीं है; व्यापारी का व्यापार नहीं चलता, नौकर के पास नौकरी नहीं, इसी कारण सभी वर्गों के लोग दुःखी है।

(ब) जीविका विहीन लोग जीविका या रोजगार न होने के कारण अत्यंत दुखी है और अपने दुख के कारण वे लोग एक-दूसरे से कहते हैं कि कहाँ पर जाए और क्या करे। इस तरह वे अपने दुख को एक-दूसरे से व्यक्त करते हैं।

(स) गोस्वामी तुलसीदास ने गरीबी की उपमा रावण (दसानन) को दी है क्योंकि जिस प्रकार रावण के आधिपत्य में लोग रावण के अत्याचार से अत्यंत दुःखी थे, उसी प्रकार, गरीबी और बेरोजगारी के अत्याचार से भी लोग उतने ही दुःखी है।

(द) इस काव्यांश में गोस्वामी तुलसीदास जी ने गरीबी और बेरोजगारी की अवस्था पर व्यंग्य किया है और वे बताते है कि लोगों के पास रोजगार न होने के कारण वे अत्यंत दुःखी है। इस प्रकार, तुलसीदासजी ने लोगो की व्यथा का मार्मिक वर्णन किया जाता है। इस

परीक्षार्थी उत्तर

(अ) वर्णित भाव-

कवि हरिवंश राय बच्चन इन पंक्तियों के माध्यम से संसार के स्वार्थी व्यवहार पर टिप्पणी करते हैं। इसके साथ कवि कहते है कि इस संसार में प्रेम का अभाव है और यह संसार ईर्ष्या और द्वेष से युक्त है जिसके कारण कवि को यह संसार अपूर्ण लगता है। कवि संसार के लोगो की तरह आचरण नहीं करता, वह अपने मन के भावो को ही व्यक्त करता है। इस प्रकार, कवि अपनी कल्पनाओ के संसार में विचरण करता है।

(ब) शिल्पगत विशेषताएँ-

(i) यहाँ सहज व सरल खड़ी बोली का प्रयोग किया है,
(ii) इन पंक्तियो में प्रसाद गुण का प्रयोग है।
(iii) वियोग श्रृंगार रस से युक्त कविता है,
(iv) ये पंक्तियाँ छंद मुक्त हैं परंतु अंत में तुक मिलती है।

(अ) "तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया" यह पंक्ति कवि आलोक धन्वा ने आसमान में उड़ती हुई पतंगो के लिए कहा है। जिस प्रकार आकाश में उड़ती हुई तितलियाँ नाजुक एवं रंग-बिरंगी होती है, इसी प्रकार ये पतंगे भी आकाश में तितलियों की भाँति नाजुक और कोमल लग रही हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ब) "अट्टालिका नहीं है रे आतंक भवन" पंक्ति के माध्यम से कवि निराला ने कहा है कि पुँजीपति वर्ग ने दलित वर्ग का शोषण करके अपने लिए बडे-बडे भवनो का निर्माण किया है। परंतु ये भवन दलितो के शोषण के प्रतीक है। इन बडे बडे भवनो में रहने के बावजूद पुँजीपत्ति वर्ग क्रांति के भय से कांपता रहता है।

11.(अ) जिस प्रकार हनुमान जी ने अपना पूरा जीवन भगवान श्रीराम की सेवा में समर्पित कर दिया था, उसी प्रकार भक्तिन अपने जीवन के अंतिम परिच्छेद को महादेवी को समर्पित कर देती है और पूरी तन्मयता, कर्तव्यपरायणता, निष्ठा के साथ महादेवी की सेवा करती है। इसी कारण भक्तिन को हनुमान जी स्पर्द्धा करने वाला बताया है।

(ब) भारत में कई सार्थक नाम भरे पडे है। कभी-कभी ये व्यक्ति के व्यक्तित्व से मेल खाते है लेकिन व्यक्ति को अधिकांशत: अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पडता है। जैसे-लक्ष्मीपति, धनपति जैसे नाम भिखारियो को दिए जाते है, सत्यनारायण हमेशा सत्य नही बोलते, सुन्दर हमेशा आँखो को प्रिय नहीं लगते है। इसी प्रकार ही भक्तिन का नाम है। अत: व्यक्ति को जीवन मे कभी-कभी नाम का विरोधाभास लेकर जीना पडता है।

परीक्षार्थी उत्तर

स) वह भक्तिन का नाम लक्ष्मी था जो कि समृद्धि शब्द का सूचक है परंतु भक्तिन आर्थिक रूप से कमजोर थी। इसलिए वह अपने नाम को किसी को नहीं बताती थी लेकिन जब महादेवी ने उसका नाम भक्तिन रखा तो वह गद्गद हो उठी क्योंकि अब उसे अपने नाम का विरोधाभास नहीं उठाना पड़ेगा।

अ) "शिरीष के फूल" पाठ के माध्यम से लेखक ने संघर्षशीलता और जिजीविषा की व्यंजना की है। शिरीष का वृक्ष गर्मी, सर्दी, वर्षा ऋतुओं में भी लहलहाता रहता है। शिरीष के वृक्ष पर बाहरी वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसके फूल के आषाढ़ के महीने तक बने रहते हैं। इससे कवि लोगों को संदेश देना चाहता है कि जीवन में हमेशा संघर्ष करते रहना चाहिए तथा प्रतिकूल व कठिन परिस्थितियों में भी जीने की इच्छा खत्म नहीं करनी चाहिए। मनुष्य को बाह्य वातावरण से अप्रभावित रहते हुए अपने लक्ष्य की ओर निरंतर प्रगतिशील रहना चाहिए।

ब) प्राचीन समय से यह कहावत प्रचलित है "यथा राजा तथा प्रजा," अर्थात जैसा राजा होगा, वैसी ही प्रजा होगी। यदि राजा ईमानदार है तो प्रजा भी ईमानदार होगी लेकिन जीजी इस कहावत के बिलकुल विपरीत सोचती है और वे कहती है "यथा प्रजा तथा राजा" अर्थात जैसी प्रजा होगी वैसा ही राजा होगा अर्थात अगर प्रजा भ्रष्ट है तो राजा भी भ्रष्ट ही होगा। अतः जीजी कहती है कि अगर प्रजा पानी का दान करेगी तो उनके राजा भगवान इन्द्र भी पानी का दान करेंगे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ई) जाति प्रथा से मनुष्य को जन्म लेने से पहले ही उसका व्यवसाय निश्चित कर दिया जाता है, इसके अलावा, उसे किसी और व्यवसाय को करने की अनुमति भी नहीं दी जाती है। इससे उसकी व्यक्तिगत रुचि और व्यक्तिगत अनुभव को कोई महत्व नहीं मिलता। यदि व्यक्ति कार्य में पारंगत न हो तो वह टालू कम करता है और कम काम करता है जिससे उसको प्रतिफल भी कम ही मिलता है अतः जाति प्रथा आर्थिक रूप से हानिकारक है।

13.(आ) "सिल्वर वैडिंग" कहानी के माध्यम से कहानीकार मनोहर श्याम जोशी ने यह संदेश व्यक्त किया है कि हमें नए वातावरण के अनुसार ढलना चाहिए, नयी उपलब्धियो को प्राप्त करना चाहिए परंतु मानव को मानव बनाए रखने वाले मूल्य बनाए रखने चाहिए। यहाँ कहानीकार ने यशोधर को एक ऐसे पात्र के रूप में चित्रित किया है जो अपने परम्परावादी नियमो को छोड़ना नहीं चाहता तो नए की तरफ आकर्षित होता है। इस तरह उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। वही दूसरी ओर उसके बच्चे पुरानी परम्पराओ को दकियानुसी मानकर छोड़ रहते। इसमें कहानीकार ने आधुनिकता का आकर्षण भी बताया है। इसके अलावा पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण भी बताता है। अतः कहानीकार यह संदेश देना चाहिए चाहता है कि हमे नयी उपलब्धियो को प्राप्त करना चाहिए परंतु इसके साथ ही पुरानी परम्पराओ को मानना चाहिए, गरीबो की उपेक्षा नही करनी चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ब) 'जूझ' उपन्यास का जितना अंश यहाँ पाठ के रूप में संकलित है, वह पूर्णतया शिक्षाप्रद और सोद्देश्य है। यहाँ लेखक ने अपने मुख्य पात्र को इस प्रकार चित्रित किया है कि वह संघर्षशील, प्रतिभाशाली और समझदार है। इसमें इसे खेतो में काम करने वाले और पुनः पढाई की इच्छा वाला बताया है। वह बालक स्वयं व्यक्तिगत स्तर पर, पारिवारिक स्तर, विद्यालय के माहौल और कविता रचने में संघर्ष करता है। इस के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि व्यक्ति को अपने जीवन में संघर्ष करते रहना चाहिए, कभी भी सीखने की इच्छा नहीं छोड़नी चाहिए। इसके अलावा, यहाँ किसानों की स्थिति का चित्रण किया है जो गरीब और गरीब होते जा रहे है।

5(अ) ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में प्रकृति का मनोरम वर्णन किया गया है। प्रकृति अमीर-गरीब में भेदभाव नहीं करती। ऐन फ्रैंक लिखती है कि लोग ~~सभी~~ समय-समय पर आसमान के तले सोते है तथा जेलो व अस्पताल में रहते हुए प्रकृति को देखने के लिए लालायित होते है। ऐन फ्रैंक भी प्रकृति को देखने के लिए लालायित होती है और प्रकृति से उसे विनम्रता और शांति प्राप्त होती है। प्रकृति सभी के साथ समानता से व्यवहार करती है।

(स) 'जूझ' पाठ में लेखक के छात्र जीवन में उसे खेती करने वाले पुनः पढाई की इच्छा वाला बताया गया है। अतः लेखक आनंद यादव के छात्र जीवन से निम्न शिक्षा मिलती है-

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(i) बच्चो को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी कठिनपरिस्थितियो का सामना साहस के साथ करते रहना चाहिए,

(ii) बच्चो को अपनी शरारतो को छोडकर पढाई में मन लगाना चाहिए,

(iii) बच्चो को संघर्ष करते रहना चाहिए,

(iv) पढाई के साथ-साथ अन्य रुचियो पर भी ध्यान देना चाहिए,

15(अ) यशोधर बाबू, "सिल्वर वैडिंग" कहानी में एक ऐसे पात्र है जो द्वन्द्वग्रस्त है जिसके कारण वह आधुनिकता की ओर आकर्षित होते है परंतु अपनी पुरानी परंपराओ को छोडते नही है। यशोधर बाबू चाहते है कि उनके बच्चे उन्हें बुजुर्ग माने अर्थात रूढ परंपरा का पोषक माने और कार्यो को करने से पहले उनकी सलाह ले। वे यह भी चाहते है कि उनके बच्चे उनके कार्यो में सहायता दे जैसे- सब्जी लाना, दूध लाना आदि। वे चाहते है कि उनके बच्चे गरीब रिश्तेदारो के प्रति करुणा भाव रखे और उनकी समय- समय पर सहायता करे। इस तरह वे अपने बच्चो से कई अपेक्षाऐं रखते है परंतु उनके बच्चे उनकी इन अपेक्षाओ को पूरा नही करते है। वे न ही तो यशोधर बाबू से कोई सलाह लेते है न ही उनके किसी काम में हाथ बंटाते। उनका गरीब रिश्तेदारो से नफरत करना भी यशोधर बाबू को अत्यधिक अखरता है। अतः इस प्रकार यशोधर अपने बच्चो से काफी अपेक्षाऐं रखते है परंतु उनकी एक भी अपेक्षा बच्चो से पूरी नही होती,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4. "आरक्षण आंदोलन से असुविधाएँ"

जयपुर, 4 मार्च 2016। प्रदेश में गुर्जर समाज द्वारा आरक्षण की माँग की गई। सरकार द्वारा उनकी मांगो को अपेक्षा करने पर उनमें आंदोलन की भावना धधक उठी जिसके कारण आम जनता को अत्यधिक परेशानी हुई। इस आंदोलन के कारन आम जनता का जीवन अत्यधिक प्रभावित हुआ। आंदोलन में गुर्जर समाज के लोगो ने जाम लगा दिया, ट्रेन की पटरी उखाड़ दी और बसो में आग लगा दी जिसके कारन प्रदेश में यातायात सुविधाएँ ठप्प हो गई। इसके अतिरिक्त सभी सामानो की दुकाने बंद करने से लोगो का दैनिक आवश्यकता की वस्तुओ को खरीदना भी दूभर हो गया। यातायात ठप्प होने से लोग काम पर नहीं जा सके। इसी प्रकार, बसो में आग लगा देने से लोग भयभीत हो गए। गुर्जर समाज के लोगो द्वारा बम्ब और गोलियाँ चलाई गई जिसका प्रभाव भी आम जीवन पर पड़ा। सरकार ने इस आंदोलन को देखते हुए इनकी मांगो पर विचार करने का आश्वासन दिया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3.

बढ़ती महंगाई : घटता जीवन स्तर

रूपरेखा-

(1) प्रस्तावना
(2) मूल्य वृद्धि का आम जनता पर प्रभाव
(3) मूल्य वृद्धि के कारण
(4) मूल्य वृद्धि को रोकने हेतु उपाय
(5) उपसंहार

1. प्रस्तावना-

आजादी के पश्चात भारत ने कई क्षेत्रो में आशातीत प्रगति की है जैसे औद्योगिक क्षेत्र में, तकनीकी क्षेत्र मे, संचार क्षेत्र में आदि। परंतु इस प्रगति के साथ-साथ हमने कई समस्याओ को भी आमंत्रित किया जाता है। मूल्य वृद्धि भी इनमे से ही एक ऐसी समस्या है जो निरंतर बढती जा रही है और इस समस्या पर काबु पाना अत्यधिक कठिन हो गया है। किसी कवि ने महंगाई की स्थिति का वर्णन करते हुए सटीक कहा है.

" पहले मुट्ठी भर पैसे ले जाते,
थैला भर चीनी लाते थे,
अब थैला भर पैसे ले जाते है,
मुट्ठी भर चीनी ला पाते है।।"

यह महंगाई दिनोदिन बढ़ती जा रही है जिसका प्रभाव सभी समुदायो पर पडता है। पहले लोग के पास पैसे कम भी होते थे, फिर भी वह बहुत सारा सामान लेकर आते थे परंतु अब यह स्थिति बदल गई है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

२. मूल्य वृद्धि का आमजनता पर प्रभाव -

महंगाई (मूल्य वृद्धि) के कारण सभी वस्तुएँ महंगी हो गई है यहाँ तक कि दैनिक वस्तुओ पर महंगाई इतनी बढ गई है कि लोग इन्हें बडी मुश्किलो से खरीदते है, इस दिनोदिन बढती महंगाई का प्रभाव सभी समुदायो पर देखने को मिलता है। गरीब महंगाई की मार से कराह रहा है, वेतभोगी इसके शिकंजे में आकर यातना सहन कर रहा है और किसान इसकी मार से रो रहा है। किसान को खेती करने को साधन नहीं है क्योंकि बीज, उपकरण सभी पर महंगाई अत्यधिक बढ गई है जिसके कारण वह इन्हें खरीद नहीं पाता।

महंगाई के कारण लोग वस्तुओ को खरीद नहीं पाते, यह हर वस्तु पर अपना आधिपत्य जमाए हुए जिसके कारण आम लोगो को इसका अत्यधिक वार सहना पडता है। उनकी दो बार की रोटी की आवश्यकता पूर्ति भी असंभव सी हो गई है।

एक गरीब का वर्णन करते हुए कहा है कि

"जिसके तिस पर मात्र लंगोटी है
चिल्लाता वह रोटी है।"

इससे पता चलता है कि महंगाई के कारण रोटी भी दुभर हो गई है।

३ मूल्य वृद्धि के कारण -

मूल्य वृद्धि के कारण है जिनके कारण हर वस्तु की कीमत बढती है। उनमे से प्रमुख निम्न है -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) जिस अनुपात में उत्पाद की माँग है, उस अनुपात में माँग की पूर्ति नहीं है।

(ii) मुद्रा के प्रचलन से महंगाई बढ़ती है। जब-जब मुद्रा का प्रसार बढ़ा है, तब-तब मुल्यो में वृद्धि हुई है।

(iii) वस्तुओ पर लगाए ~~गए~~ प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर लगते है जिसके कारण वस्तु की कीमत बढ़ जाती है।

(iv) बजट एवं सरकार की नीतियो के कारण भी मुल्यो में वृद्धि होती है।

5. मुल्य वृद्धि को रोकने हेतु उपाय-

मुल्य वृद्धि के खलपात को रोकना असंभव सा है परंतु इस पर रोक हेतु निम्न उपाय किए जा सकते है-

(i) जिस अनुपात में वस्तुओ की माँग है, उसी अनुपात में वस्तुओ का उत्पादन किया जाना चाहिए

(ii) सरकार द्वारा वस्तुओ पर करो में कमी की जानी चाहिए।

(iii) बजटो व सरकारी नीतियो में वस्तुओ व सेवाओ पर मुल्य वृद्धि को कम किया जाना चाहिए।

(iv) मुद्रा के प्रसार को नियंत्रित किया जाना चाहिए जिससे मुल्य वृद्धि मे कमी हो।

(v) मुल्य वृद्धि को रोकने हेतु संसाधन सही मात्रा में आवंटित किए जाने चाहिए।

परीक्षार्थी उत्तर

(vi) लोगो द्वारा विकल्प वाले उद्योगो को अपनाना चाहिए जिससे उत्पादन में वृद्धि हो।

(vii) आगजनी, हड़ताल, कालाबाजारी जैसे कार्यों पर रोक लगानी चाहिए।

(viii) वस्तुओ का भंडारण अर्थात जमाखोरी पर भी रोक लगानी चाहिए।

5. उपसंहार-

"घर लौट बहुत रोए माँ-बाप अकेले में
मिट्टी के खिलौने भी सस्ते न थे मेले में,"

किसी कवि की ये पंक्तियाँ महँगाई का सही वर्णन करती है कि महँगाई रूपी सुरसा का आकार इतना दैत्य रूप हो गया है कि मिट्टी के खिलौने जैसी चीजो पर भी महँगाई बढ रही है। महँगाई का प्रभाव हर समुदाय पर है। इस महँगाई से निजात पाना अत्यधिक कठिन है लेकिन यदि प्रयास करे तो कुछ हद तक इस ~~घर~~ से छुटकारा पाया जा सकता है। महँगाई को वर्णित करने के लिए यह पंक्ति ही काफी है.

* * * * *

दुःख, दर्द और अनाचार का नाम है महँगाई

* * * * *

समाप्त